Volume-7, No. 2 Aug.-2020, pp. Hin.33-36

प्राकृत मुक्तक काव्य परम्परा में वज्जालंग्ग का स्थान

डॉ0 नीतू अवस्थी, असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत)
राजकीय महाविद्यालय बबराला गुन्नौर सम्भल उत्तर–प्रदेश भारत।

शोधसार–
भारत की प्राचीन साहित्यिक भाषाओं में प्राकृत और संस्कृत प्रमुख है। इन दोनों भाषाओं में विपुल साहित्य है। प्राकृत में विशेष रूप से प्राचीन साहित्य मिलता है। इसमें आगम ग्रन्थों में अन्य सैद्धान्तिक, दार्शनिक साहित्य के अतिरिक्त कथा साहित्य, चरित काव्य, महाकाव्य और मुक्तक काव्यों की भी रचना की गयी है। मुक्तक के रूप में स्त्रोत और मुक्तक गाथाओं का प्रयोग किया गया है। प्राकृत भाषा में मुक्तकों का आरम्भ धर्म और सिद्धांत के आधार पर हुआ जहाँ एक ओर धर्म तत्व वहीं दूसरी ओर श्रृंगार तत्व भी है। प्राकृत भाषा में मुक्तक काव्यों का विकास वस्तुतः आगम साहित्य की उस प्रवचन पद्धति से हुआ जिसमें उपदेश की बात को सरस पद्य में कह दिया जाता था, प्राकृत मुक्तक काव्यों की परम्परा बहुत व्यवस्थित और वैविध्यपूर्ण है इसमें एक ओर धर्म तत्व तो दूसरी ओर श्रृंगार तत्व हैं। प्राकृत में इस प्रकार के मुक्तकों के तीन संग्रहों की जानकारी मिलती है। गाहासत्तसई–यह प्राचीन मुत्तक काव्य है इसका समय पहली शती ई0 माना जाता है यह श्रंगार रस का प्रशान्त समुद्र है। इसमें 700 गाथाएं है, जो वज्जा मे निबद्ध नहीं है। **इसे प्रथम स्थान प्राप्त है।** प्राकृत मुक्तक काव्य में जैनकवि जयवल्लभ कृत **वज्जालग्गं का द्वितीय स्थान है।** इसमे अनेक प्राकृत कवियों की गाथाएं संग्रहित हैं। 'विषम बाणलीला' यह भी गाथाओं का एक संग्रह है, किन्तु यह उपलब्ध नहीं है। जयवल्लभ' कृत वज्जालग्गं मुक्तक का प्राकृत सुभाषित ग्रन्थों में अप्रतिम स्थान है। वज्जालग्गं वज्जाबद्ध शैली में लिखा गया है वज्जा शब्द देशीय है इसका अर्थ अधिकार या प्रस्ताव है। एक विषय से सम्बद्ध गाथायें एक वज्जा के अर्न्तगत आती हैं इसमें कुल 95 वज्जायें तथा 795 गाथायें संग्रहित हैं। इस काव्य में सज्जन, दुर्जन, स्नेह, नीति, धैर्य, साहस, दैव, दीन, दारिद्रय, नीति आदि विषय वर्णित है। इसमें जीवन के जितने क्षेत्रों की अनुभूतियाँ समाविष्ट हैं, उतनी गाहासत्तसई (गाथा सप्तसती) में नहीं। लोक संग्रह की भावना अन्तर्निहित होने के कारण यह गाहासत्तसई की अपेक्षा श्रेष्ठ काव्य है। इस काव्य की गाथाएं सच्ची मानवता के प्रसार का सन्देश देती हैं।

मुख्य शब्द– वज्जालग्गं, प्राकृत मुक्तक काव्य, विषमबाणलीला, गाहासत्तसई

भारत की प्राचीन साहित्यिक भाषाओं में प्राकृत और संस्कृत प्रमुख हैं। इन दोनों ही भाषाओं में भारतीय संस्कृति के साथ धार्मिक एवं दार्शनिक विचारधाराओं को परिपुष्ट करने वाला साहित्य मिलता है। साहित्य की सभी विधाओं के उदाहरण संस्कृत साहित्य में मिलते हैं। संस्कृत में वैदिक, पौराणिक, जैन, बौद्ध धर्म तथा अन्य भारतीय दर्शनों से सम्बन्धित साहित्य की रचना होती रही। मुक्तक के रूप में सूत्र, स्त्रोत और सुभाषित पद देखे जा सकते हैं।

वस्तुतः मुक्तक का नाम ही तो उसकी सभी विशेषताओं का निर्देश कर देता है। मुक्त शब्द मुच धातु से क्तप्रत्यय जोडने पर सम्पन्न होता है तथा भूतकाल एवं फलाश्रय के समानाधिकरण का ज्ञान कराता है। इस प्रकार मुक्त शब्द का अर्थ होता है छोड़ा हुआ अथवा स्वतंत्र। मुक्त शब्द से ही संज्ञार्थ अथवा ह्रस्व अर्थ में कन् प्रत्यय होने पर मुक्तक शब्द बनता है इस प्रकार मुक्तक शब्द का अर्थ हुआ– 'मुच्यते इति मुक्तम तदेव ह्रस्वं द्रव्यं मुक्तकम्'। अर्थात लघु कलेवर मुक्त पदार्थ मुक्तक कहलाता है। सभी अर्थ की संगति करते हुए मुक्तक को हम इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं– ''मुक्तक उस पद्य को कहते हैं जो परतः निरपेक्ष रहता हुआ भी पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति में समर्थ हो चमत्कृति गुम्फन एवं ध्वनि आदि की विशेषताओं के कारण रमणीय–तथा चर्वणा में ब्रह्मानन्द, सहोदर रस की अनुभूति द्वारा हृदय को मुक्त दशा में पहुंचाने में समर्थ हो''।

मुक्तक काव्य की प्राचीन परम्परा–

विश्व साहित्य का पुराण पुरूष 'ऋग्वेद' मुक्तकों का सर्वप्रथम संग्रह ग्रन्थ है जिसमें विभिन्न कालों के अनेकानेक कवियों की रचनाएं संग्रहित हैं। 'विन्टरनित्ज' का कथन है–''जब तक ऋग्वेद की एतिहासिक पृष्ठभूमि को मानकर न चला जाएगा, तब तक कालिदास की प्रौढ़ और परिष्कृत रचना, कपिल दार्शनिक शक्ति, जय देव की रहस्यात्मक प्रवृत्ति तथा व्यास औरवाल्मीकि की प्रसाद गुण पूर्ण शैली, ये सभी जो स्वयं इतने महत्वपूर्ण हैं कि रेगिस्तान में बिखरे

हुए हरे भरे नखलिस्तान की भांति बिखरे प्रतीत होंगे। 'प्रो0 हिरियन्ना' का मत है कि– ''प्राचीनतम भारतीय काव्य जो हमें उपलब्ध है, ऋग्वेद में संग्रहित हैं। इसमें धार्मिक गीतों का संकलन है। ऋग्वेद के सूक्तों में नाना देवताओं की स्तुति से यज्ञ में पधारने के लिए, भौतिक सुख सम्पादन तथा आध्यात्मिक अर्न्तदृष्टि उन्मीषित करने के हेतु नाना प्रकार के छन्दों में स्तुति की गई है। श्रृंगार का सूक्ष्म किन्तु मधुर रूप देखने को मिलता है–

''जायेव यत्थ उशती सुवासा ऊषा हस्रेव् निरिणीते् वृक्षः।

मुक्तककार को थोडे–थोडे में ही बहुत कुछ कह गुजरने के लिए ध्वन्यात्मक शैली का आश्रय लेना पडता है। व्यंजना की योजना, अलंकारों का संतुलित विधान तथा वाग्वैदग्ध एवं चमत्कार की विस्मय कारिणी सृष्टि ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं में दृष्टव्य है जो उन्हें उच्च कोटि का मुक्तक सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं उदाहरण–

''परा हि मे विमन्यवः पतन्ति तस्य इष्टये/वयो न वसती रूप।

वशिष्ठ कहते हैं कि मेरी गति धन प्राप्त करने की इच्छा से वरूण पर ही पहुंचती है जिस प्रकार विश्राम की आवश्यकता होने पर पक्षी अपने नीड पर पहुंच जाता है। यहां उपमा अलंकार से वस्तुध्वनि हुई।

संस्कृत के गूढ़ बिन्दुमती प्रहेलिका आदि कूट मुक्तकों की शैली का विकास संभवतः इसी शैली से हुआ भागवत के कूट श्लोक, सिद्ध कवियों की अटपटी वाणी, कबीर की उलट वासियाँ आदि इसी प्रवृत्ति के विकसित रूप प्रतीत होते हैं। सारांश यह है कि ऋग्वेद प्राचीनतम मुक्तक संग्रह है जिसमें विविध विषयों पर आधारित रचनाएं संग्रहित हैं।

सभ्यता के अरूणोदयकाल में हमें दो मुक्तक संग्रह उपलब्ध होते हैं एक ऋग्वेद दूसरा अर्थर्ववेद। विषय की दृष्टि से दो प्रकार की विचार धाराएँ (1) लौकिक या एहिकता परक और दूसरी परलौकिक या आमुष्मिकता परक ये दोनों प्रकार की विचार धाराएं अत्यंत प्राचीन काल से प्रवाहित होती चली आ रही हैं।

ऐतिहासिक मुक्तकोंः के अन्याय प्रकारों में नीति एवं उपदेशात्मक मुक्तकों की रचना सर्वप्रथम ऐतरेय, ब्राह्मण के अर्न्तगत आये हुए उन कथानकों के बीच हुई है, जो गद्य में लिखे गये हैं।

आगे चलकर मुक्तक स्वतंत्र छन्दों के रूप में गृहित किये जाने लगे। मुक्तक प्राचीन कथा तत्व के ही कलात्मक विकसित एवं संक्षिप्त रूप है यही कारण है कि ये मुक्तक अनेक कथाओं के बराबर रस प्रदान करने की क्षमता रखते हैं।

प्राकृत में मुक्तकों को (1) रसेतर मुक्तक और (2) रसपूर्ण मुक्तक इन दो श्रेणियों में रखा गया है। रसेतर मुक्तक के अर्न्तगत धार्मिक सूक्तियां और स्तोत्र प्रायः आते हैं। 'रसपूर्ण मुक्तकों' में धर्म, अर्थ और काम के त्रिवर्ग से सम्बन्धित लोक प्रसिद्ध मान्यताओं को और नीति सम्बन्धित विषयों को गाथा रूप में निबद्ध किया जाता था। प्राकृत मुक्तक काव्य का विकास वस्तुतः आगम साहित्य की उस प्रवचन पद्धति से हुआ जिसमें उपदेश की बात को सरस पद्य में कह दिया जाता था।

आनदवर्धन ने मुक्तक काव्य की जो परिभाषा प्रस्तुत की है उसके अनुसार मुक्तक काव्य की रचना का श्रेय संस्कृत को न मिलकर प्राकृत भाषा को ही मिलता है। मुक्तक काव्य की बिल्कुल नवीन परम्परा का आरम्भ (गाहासत्तसई गाथा सप्तशती) से होता है। इस मुक्तक की प्रौढ़ परम्परा इस बात की ओर भी इंगित करती है कि प्राकृत में इस काव्य ग्रन्थ के पूर्व भी इस कोटि की रचनाऐं अवश्य रही होंगी। गोवर्द्धनाचार्य, अमरूक और भर्तृहरि जैसे कवियों ने अपने मुक्तक काव्यों की रचना में प्राकृत मुक्तकों को अवश्य आधार बनाया है। संस्कृत में कालिदास ने श्रृंगारिक मुक्तकों की, रचना की पर भर्तृहरि ने इस क्षेत्र में आकर वैराग्य और नीति के भी मुक्तक रचे। कुन्दकुन्द, स्वामिकार्तिकेय, वट्टेकर, नेमिचन्द्र, हरिभद्र प्रभृति प्राकृत लेखकों के आमुष्मिकता परक सैद्धान्तिक मुक्तक वाक्यों की शैली पर जोगीन्दु का 'योग सार' और 'परमात्मप्रकाश', रामसिंह मुनि का 'पाहुड दोहा' देव सेन का 'सावय धम्म दोहा' आदि रचनाएं प्रस्तुत की गई है। आचार्य हेमचन्द्र के श्रृंगार, वीर और करूणा रस सम्बन्धी मुक्तक पद्य प्रसिद्ध हैं।

अतः प्राकृत में मुक्तक काव्यों की परम्परा बहुत व्यवस्थित ओर वैविध्यपूर्ण है। इसमें एक ओर धर्म तत्व है तो दूसरी ओर श्रृंगार तत्व है। प्राकृत में इस प्रकार के मुक्तकों के तीन संग्रहों की जानकारी मिलती है जो निम्नलिखित है–

गाहासत्तसई–

यह सर्वप्राचीन मुक्तक काव्य है इसका समय पहली शती ई0 माना जाता है। इसमें 700 गाथायें हैं परन्तु ये सभी गाथाऐं किसी प्रकरण, वज्जा या पद्धति में बद्ध नहीं है। इसमें विशेष रूप से रमणीय दृश्यों एवं परिस्थितियों का चित्रात्मक एवं भावपूर्ण वर्णन विद्यमान है। इनमें विशेष रूप से श्रृंगार से और सम्बन्धित गाथायें ही अधिक हैं। गाथा सप्तशती श्रृंगार रस का प्रशान्त समुद्र है।

विषमबाणलीला–

यह भी एक संग्रह है परन्तु यह उपलब्ध नहीं है। विषबाणलीला का उल्लेख आनन्दवर्धन ने किया है।

उन्होंने अपने ध्वन्यालोक में इस कृति का उल्लेख करते हुए इसकी एक प्राकृत गाथा उद्धधृत की है। आचार्य हेमचन्द्र ने काव्यानुशासन की अलंकार चूडामणि में मधुमय विजय के साथ विषमबाण लीला का भी उल्लेख किया है।

वज्जालग्गं–

प्राकृत मुक्तक काव्यों में गाथा सप्तशती का प्रथम स्थान है तथा दूसरा स्थान वज्जालग्गं को प्राप्त है। वज्जालग्गं में भी अनेक प्राकृत कवियों की सुभाषित गाथाएं संकलित हैं। प्राकृत में सुभाषितों की पद्धति क्रम में अथवा वज्जाबद्ध रूप में संग्रहित करने की परम्परा वज्जालग्गं में ही देखने को मिलती है। वज्जालग्गं में जैनकवि जयवल्लभ द्वारा 795 गाथाओं का संकलन किया गया है।

जयवल्लभ ने प्राकृत काव्य तथा गाथाओं की प्रशंसा की है। इसके अतिरिक्त प्राकृत भाषा को बहुत ही सरल और जनप्रिय बताया। संस्कृत का ज्ञान न रखने वाले और श्रृंगारिक प्रकृति रखने वाले लोगों को देखकर संस्कृत के विद्धान होने पर भी इन्होंने प्राकृत भाषा में इस संग्रह की रचना की। वज्जालग्गं पर चौदहवी तथा पन्द्रहवी शती ई0 में क्रमशः 'रत्नदेव' और 'धनसार' ने टीका लिखी।

गाथा प्रथम में सर्वज्ञ श्रुत देवी के स्मरण से यह ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार जैन धर्मावलम्बी थे, जैसा कि निम्नलिखित गाथा में दृष्टव्य है–

''सव्वन्नुवयणपंकयणिवासिणिं पणमिऊण सुयदेविं।
धम्माइतिवग्गजुयं सुयणाण सुहासिंय वोच्छं।।

वज्जालग्गं में जो गाथाएं हैं वह मूलतः महाराष्ट्री प्राकृत में है परंतु जयवल्लभ ने जैन महाराष्ट्री की प्रवृत्तियों का समावेश किया है। इसके साथ अनेक देशी शब्दों का प्रयोग किया यथा उज्जड, अडयण, अत्ता, आढत्त आदि।

वज्जालग्गं में जयवल्लभ ने श्रेष्ठ गाथाओं का चयन कर उनको वज्जाओं में विभक्त किया। सज्जण, सुधरिणी वज्जा की गाथाएं वज्जलालग्गं की प्राण है। वज्जालग्गं मौलिकता की दृष्टि से उच्चकोटि का ग्रन्थ है। इसमें भाव, कल्पना, और शिल्प तीनों का अद्भुत साहचर्य है। इसकी गाथाओं में एक ओर सज्जनों के गुणों का वर्णन होता है तो दूसरी ओर दुर्जन मनुष्यों के विषय में बताया, कि दुर्जन मनुष्य अकारण दूसरों से बैर रखते हैं, अपना काम निकल जाने पर मुंह फेर लेते हैं, परन्तु सज्जन मनुष्य किसी से बैर नहीं रखते हैं वे सदैव दूसरों की सहायता करते हैं। कुछ गाथाओं में कंजूस व्यक्ति की निन्दा की गई है पर साथ ही उदार व्यक्ति के उदात्त चरित्र का वर्णन किया है। कहीं प्रेम की प्रशंसा है तो कहीं उसकी निन्दा भी की गई है। वज्जालग्गं में नीति सम्बन्धी गाथाएं भी मिलती हैं जिसके द्वारा नैतिक मूल्यों की शिक्षा मिलती है। वज्जालग्गं की गाथाएं, संतोष, क्षमा, मैत्री, करूणा, परोपकार, दान, नीति, सदाचार, क्षमा, गुण शील, प्रेम इत्यादि श्रेष्ठ गुणों की सत्प्रेरणा देती है।

वज्जालग्गं की गाथाओं के माध्यम से तत्कालीन लोक संस्कृति का परिचय मिलता है। इसके अतिरिक्त तत्कालीन पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन की झलक मिलती है। सामाजिक दशा समाज में प्रचलित रीति रिवाज, कुरीतियां, लौकिक मान्यतायें तत्कालीन समाज का चित्र उपस्थित करती हैं।

वज्जालग्गं में केवल तत्कालीन कवियों की ही गाथाओं का संग्रह कवि ने नहीं किया अपितु इसमें प्रथम शती ई0 से लेकर 1340 ई0 तक के ग्रन्थों की गाथाओं का संग्रह है। वज्जाग्गं में बहुत सी सूक्तियों और लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ जिनका वर्तमान समय में स्वरूप बदल गया है।

वज्जालग्गं एक श्रेष्ठ काव्य है। भाषा की दृष्टि से यदि हम देखें तो इसमें हमें मिश्रित भाषा के लक्षण दिखाई देते हैं। कहीं जैन महाराष्ट्री, अर्धमागधी का प्रयोग देखने को मिलता है इसके अतिरिक्त मागधी महाराष्ट्री की विशेषताएं भी देखने को मिलती हैं। एक ही पद्धति में शैली भेद विद्यमान है। शैली की उदात्ता भाषा की सजीवता देखते ही बनती है। इस काव्य में माधुर्य और प्रसाद गुण, की प्रधानता है साथ ही कही कहीं ओज गुण की विशेषताएँ, विशिष्टताएँ हैं। यदि कहीं–कहीं दीर्घ समासान्त पदावली, कही समास है, तो नितान्त विरल, तो कहीं समास का प्रयोग हुआ ही नहीं। इस काव्य में वैदर्भीरीति के दर्शन होते हैं। इसमें मुख्य रस श्रंगार है अर्थात श्रंगार रस की प्रमुखता है इसके अतिरिक्त करूण, हास्य, वीर, अद्भुत, भयानक आदि रसों के उदाहरण भी देखने को मिलते हैं। प्रस्तुत काव्य में रसों के साथ अनेक अलंकारों का प्रयोग हुआ है जैसे अनुप्रास, यमक, अतिश्योक्ति, समासोक्ति, विभावना, दीपक, तद्गुण, प्रतीक, अर्थान्तरन्यास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि परन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ में श्लेष की प्रधानता है परन्तु श्लेष स्वतंत्र रूप में कम, अन्य रसों के साथ अधिक दिखाई देता है। सम्पूर्ण ग्रन्थ रस, ध्वनि, वक्रोक्ति और अलंकारों की गरिमा से परिपूर्ण है। इन गुणों के कारण इस ग्रन्थ की कुछ गाथाएं विभिन्न अलंकार ग्रन्थों में उदाहरण के रूप में दृष्टिगत होती हैं।

इस प्रकार वज्जालग्गं प्राकृत मुक्तक साहित्य का एक विशिष्ट ग्रन्थ है। वज्जालग्गं का प्रभाव आचार्य भामह, भर्तृहरि, तुलसीदास, रहीम, बिहारी प्रभृति कवियों पर पड़ा है जिसके कारण विभिन्न साहित्यकारों ने

वज्जालग्गं की गाथाओं को अपनी रचनाओं का आधार बनाया।

शोध निष्कर्ष–

वज्जालग्गं प्राकृत साहित्य की एक अनूठी कृति है क्योंकि इसमें भाव कल्पना और शिल्प का अद्‌भुत साहचर्य है। इसमें कवि ने अनेकान्त विचारधारा को अपनाया है प्राकृत का यह काव्य समाज को यथार्थ और सम्यक दिशा निर्देश देने वाला है साथ ही वज्जालग्गं में वर्णित विभिन्न नैतिक मूल्य तथा जीवन मूल्य मनुष्य को सम्मक जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं। साहित्यिक दृष्टि से वज्जालग्गं एक श्रेष्ठ काव्य है। भाषा की संजीवता शैली की उदात्ता माधुर्य एवं प्रसाद गुणों की प्रमुखता और भावों की प्रखरता इसकी प्रमुख विशिष्टताएं हैं। इसमें मुख्य रस श्रंगार के साथ–साथ करूण, शान्त वीमत्स आदि रसों का समावेश है। सम्पूर्ण ग्रन्थ रस ध्वनि वक्रोक्ति और अलंकारों की गरिमा से परिपूर्ण है। इसमें ग्रन्थकार ने तत्कालीन उपलब्ध समस्त प्राकृत गाथाओं में से धर्म, अर्थ, काम त्रिवर्ग से सम्बन्धित उपादेय गाथाओं को विधि पूर्वक वज्जाबद्ध करके प्रस्तुत किया है, जयवल्लभ ने इसे पूर्णतः लौकिक और लोकरंजन की भावना से एक सुभाषित काव्य ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत किया।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गाहासत्तसई (गाथा सप्तशती) और वज्जालग्गं दोनों ही प्राकृत मुक्तक काव्य संग्रध है जिनमें हालकृत गाहासत्तसई को प्रथम तथा वज्जालग्गं को द्वितीय स्थान प्राप्त है दोनों ही मुक्तक काव्यों में अनेक प्राकृत कवियों की सुभाषितगाथाएं संग्रहित हैं। प्राकृत भाषा के इन दोनों मुक्तक काव्यों में बहुत सी समानताएं होते हुए कुछ असमानता है जैसे गाथा सत्तसई की गाथाएं विषय के अनुसार एक स्थान पर नहीं रखी गई है जैसा कि वज्जालग्गं काव्य में है। प्राकृत साहित्य में दोनों काव्य अपना एक अलग स्थान रखते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. ऋग्वेद 1/124/7
2. ऋग्वेद 10/108/1
3. प्राकृत साहित्य का इतिहास–डा0 जगदीश चन्द्र जैन, प्र0 चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी 1961
4. गाहासत्तसई संकलनकर्ता सातवाहनहाल, अनु0 डा0 जगन्नाथ पाठक, प्र0 चौखम्बा 1961
5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ0 नेमिचन्द्र शास्त्री, प्र0 तारा पब्लिकेशन्स वाराणसी।
6. वज्जालग्गं जयवल्लभ रत्नदेव कृवसंस्कृत टीका सहित सं0 प्रो0 माधव वासुदेव पटवर्धन, प्र0 प्राकृत ग्रन्थ परिषद, अहमदाबाद, 1969 ई0।